मनुष्य बनो

انساں بنو

मानवता के मुख्य नियम

पहला भाग

संस्थापक

फकीर चन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२— सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ़ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल

सम्पादक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण नेवावशिष्यते ॥

❀ मनुष्य बनो ❀

वर्ष २६	पूस सं० २०३२ वि० जनवरी, १९७६	संख्या ४

❀ स्तुति ❀

तेरी गति मति कौन लखै ।

वेद न जाने महिमा तेरी, ऋषि मुनि फिरें भरम की फेरी ।
शारद तेरे दर की चेरी, आनहि आन बके ॥१॥
अपरमपार पार निः पारा, तू ही सार असार का सारा ।
अजर अमर अविनाशी प्यारा, घट-घट व्याप रहे ॥२॥
नहीं एक और नहीं अनेका, सब विधि किया विचार विवेका
भूले ज्ञानी ध्यानी भेषा, कोई न मर्म लहे ॥३॥
तू प्रकाश है तू परछाईं, तू ही परम तत्व है झाईं ।
कैसे स्तुति करूँ गुसाईं, सुध-बुध भरम बहे ॥४॥
अनहित सहित सकल हितकारी, निराधार तू जगधारी ।
... चरण शरण बलिहारी, सेवक शरण चहे ॥५॥

|| मनुष्य बनो ||

सत्संग

हजूर परम सन्त परम दयाल फकीरचन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर दिनाँक १७ नवम्बर १९७४

(गताँक पृष्ठ ३२ से आगे)

फिर जब कोई सन्त सत्गुरु संसार में आता है तो वह जीव भी जन लेकर उस सन्त सत्गुरु के सम्पर्क में आता है और बाकी की कमाई पू करके अपने आदि घर को पहुंच जाता है। बाकी की कमाई क्या है ? य विश्वास हो जाना कि अन्तर में जो भाव विचार, संकल्प और शकलें साम आती हैं वह सब माया है। आप लोगों के अनुभवों से मुझे यह ज्ञान हुआ जिनके अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ और उन्होंने मुझे बताया, मैं उन सत्गुरु स्वरूप और ज्ञानदाता का रूप समझ के उनकी सेवा करता हूँ - व लोगों से या बाहर दौरे पर जाकर लोगों से माँग कर लाता हूँ और उन सेवा करता हूँ।

प्रकाश और शब्द का साधन सन्तों ने इसलिए दिया कि जीव भवस से पार हो जाऐं। शस्त्रों का भी यही मार्ग है कि सावित्री से आगे, उ परन्तु प्रकाश और शब्द का साधन हर एक आदमी नहीं कर सकता क संसार तो सांसारिक इच्छाओं में ग्रस्त हैं। इसलिए सन्तमत स लिए नहीं। सर्वसाधारण के लिए है वेद मार्ग शिव—संकल्प मस्तु। विचार रखो। प्रेम और स्नेह रखो। किसी निर्धन और दुखिए की सह करो ताकि तुम्हारी माया अच्छी बन जाए और इस जन्म में भी सुख और अगला जन्म भी अच्छा मिले। यह है भेद जो मैं आपक चाहता हूँ।

सोइ सुरत को लिया जगाई, दया से अपने अंग लगाकर

... का मार्ग अध्याति

आगे है । सुरत का मुझे पता नहीं लगता था । जबसे मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनके अनेक प्रकार के काम कर जाता है और मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास होगया कि यह जो कुछ भी मेरे अन्तर प्रकट होता है यह सब मन का खेल है तो अब मैं उस वस्तु की अपने अन्तर में खोज करता हूँ जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है । उस वस्तु का नाम सुरत है । और वह सुरत सर्वाधार की अंश है । वह वस्तु जब शरीर और मन को भूल जाती है तब प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है ।

मैंने एक सत्सँग में कहा था कि सर्वाधार यहाँ नहीं रहता । इस पर मेरे एक मित्र ने कहा कि महाराज ! आप वह बात कहें जो वेदों और शास्त्रों के अनुकूल हो । मैंने कहा कि यह मेरा अनुभव है । उन्होंने कहा कि जब तक आप हैं तब तक तो यदि कोई व्यक्ति प्रश्न करेगा तो आप उसको विश्वास दिलवा देंगे लेकिन यदि आपके बाद कोई प्रश्न करेगा तो हम लोग क्या उत्तर देंगे ।

कल सेठ दुर्गादास जी चण्डीगढ़ से आए । उन्होंने मुझे गीता का अनुवाद दिखाया जो नीचे लिखा है ।

खफी से खफी है मेरी हस्तोबूद
मगर है मुझी से जहाँ का नमूद
मुझी में है मखलूक सारी मकीं
मगर मैं मकीं खुद किसी में नहीं

इससे अब मुझे उत्साह होगया है कि मेरा अनुभव ठीक है । अब जो आदमी मालिक को मिलने के लिए राम, कृष्ण, बाबे फकीर किसी और गुरु मसजिद, मंदिर, गुरद्वारा या गिरजा में जाते हैं मालिक को उनका झलक भी नहीं पा सकता । मुझे प्रसन्नता है कि मेरा अनुभव ठीक है । अब मुझे पता लग गया कि सुरत क्या है । सुरत सर्वाधार की अंश है—

"अकह अपार अगाध अनामी"

वह है जात । ...

में है इसलिए प्राणीमात्र में इन्सान की श्रेणी ऊँची है ।

सतसंग द्वारा वचन सुनाया, सहज रीत से जीव चिताया

मैं अपने सादा शब्दों में इस गूढ़ भेद को आप लोगों को बता रहा हूँ, मेरी बात को कोई काट नहीं सकता । मैं सहज रूप से जीवों को बानी का पता देता हूं ।

अपना आपा उसे दिखाया, अनहद बानी घट में सुना कर ।

मैं सारा जीवन मालिक को ढूंढता रहा । वह मालिक क्या निकला ? मेरी सुरत । जब वह सुरत ऊपर चली जाती है तो वही सुरत वहाँ आकर अलख अगम और अनाम हो जाती है । सुरत का भण्डार अमर है । वह मालिक यहाँ नहीं रहता । कैसे ? हाड, मांस, नस नाड़िया और खून से विटामिन बने और Vitamin भोजन से बने । हमारा मन महः जनः और तपः ऊपर के लोकों से आया । हमारा आत्मा सत लोक से आया और हमारी सुरत अनामी धाम से आके यहाँ फस गई इसलिए असली मालिक यहाँ नहीं रहता । गुरु आया और जीव को चिताया कि भई ! तेरा असली घर यह नहीं है बल्कि तेरा असली घर बहुत ऊपर हैं ।

सहस कमल त्रिकुटी लख पाई, सुन महासुन गति परखाई ।

मैं सारा जीवन वाणी के जाल में रहा, सहस दल कमल क्या है हजारों पंखड़ियों वाला । तुम्हारे मन से अनेक प्रकार की वृत्तियां हर समय निकलती रहती हैं । यही सहस दल कमल है । एक सहस दल कमल ऊपर ब्रह्माण्ड में है । उसकी किरणें विराट पुरुष को बनाती हैं । सहस दल कमल हमारा मन हैं । ऊपर से जो धारें आती हैं वह तीन प्रकार की होती है । स्थूल, सूक्ष्म और कारण । स्थूल धारें शारीरिक जीवन में क्या करती हैं उनका हमको ज्ञान नहीं होता कि शरीर में रक्त कैसे चलता है या खाना कैसे पचता है आदि २ । सूक्ष्म हमारा बिचार हैं और तीसरा मन की कारन प्रकृति है । जब यह स्थूल और सूक्ष्म माछा एकत्र हो कारण प्रकृति में आ जाता है तो उसके कारण वहाँ घण्टा, संख की ध्व

बाकी वृत्तियों को छोड़कर केवल गुरु के रूप की वृत्ति को ले लेता है तो उसमें प्रेम होता है। वहाँ तीन वस्तुयें रह जाती हैं--एक ध्येय, एक ध्यानी और एक ध्याता। इसका नाम त्रिकुटि है। जब यह अवस्था ज्यादा घनी हो जाती है तो रूप सामने आ जाता है और प्रेम का आकर्षण समाप्त हो जाता है। उदाहरण से समझो। जैसे विवाह से पहले तुम बरात ले जाते हो वह है सहस्रदल कमल। जब विवाह हो गया और स्त्री सामने आ जाती है अर्थात रूप सामने आ गया, वह है। त्रिकुटि वह जब स्त्री मिल जाती है तो उसका नाम है सुन्न।

मेरा लड़का जब पौने दो साल के बाद रूस से ट्रेनिंग लेकर वापिस घर आया तो अपनी मां को मत्था टेका। मैं भी सामने खड़ा देख रहा था। मेरी स्त्री की आंखों की पुतलियां ऊपर को चढ़ गई। ऐसे ही अन्तर में जब रूप से प्रेम हो जाता है तो स्वाभाविक ही आँखों की पुतलियां ऊपर को चढ़ जाती हैं। बलपूर्वक पुतलियों को ऊपर चढाना ठीक नहीं है। ऐसे ही जब आदमी मरने लगता है तो वह संसार को भूल जाता है और उसकी पुतलियां चढ़ जाती हैं। लगन और प्रेम के कारण पुतलियां अपने आप ऊपर को चढ़ जाती हैं। जब रूप में आदमी लीन हो जाता है तो उस अवस्था का नाम महासुन्न है। महासुन्न में यह भी पता नहीं रहता कि मेरा कोई प्रीतम भी था या कि नहीं, दोनों एक हो जाते हैं। महासुन्न से निकालना किसी महापुरुष का काम है। मैं नहीं निकल सकता था मगर आप लोगों की दया से निकला।

भंवर में माया काल लखाई, अन्त में सतपद धाम में लाकर।

जब मुझे विश्वास होगया कि मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं तो मुझे माया और काल का रूप समझ में आ गया। अन्तर के सारे विचार माया हैं। आगे है सतपद और वह हमारे आत्मा का भण्डार है। वहां केवल प्रकाश और शब्द है।

अलख अगम के पार अनामी, सन्त कहें जिसे राधास्वामी।

अलख अगम के परे क्या है ?

समझा है अपने कर्म भोगवस कहता हूँ । वह वस्तु जो मेरे अन्तर में प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वह अनामी है और वही ज़ात है। उस की कोई थाह नहीं—

वह है है है इसमें कोई शक नहीं ।
मगर उसके कहने का किसी को हक नहीं ।।

उसको कोई परम तत्व कह देता है, कोई अनामी कहता है, कोई अकाल पुरुष और कोई उसको ज़ात कहता है । सन्तों ने अपने शब्दों में उसका वर्णन किया । हम संसार में आए और विषय विकार या काम क्रोध.लोभ मोह अहंकार में फंस गए । जब तक जीवन है काम क्रोध लोभ मोह अहंकार को कोई त्याग नहीं सकता और न हो अब तक किसी से छुप सके । इसी का नाम तो जीवन है । जिसमें काम नहीं वह तो होजड़ा है, वह तो केवल ताली बजाना जानता है । जिन्होंने ज्यादा काम भोगा वह निर्बल और बेकार होगए । यदि तुममें क्रोध नहीं तो जो भी आएगा वह तुमको फुटबाल बना देगा । यदि तुममें लोभ नहीं तो तुम बाल बच्चों को कैसे पालोगे ? इसलिए हर वस्तु रहे परन्तु Control में रहे और उचित हो। तुमको जीवन मिला है । स्वास्थ्य का ध्यान रखो । मन में रहते हो तो अपने विचारों को शुद्ध रखो । संतों का हाल देखो । क्या लोभ के बिना डेरे बन गए ? क्रियात्मिक रूप को कोई नहीं देखता । केवल किताबों का सहारा लेते हैं । काम क्रोध लोभ मोह अहंकार का सूक्ष्म रूप में रहना आवश्यक है । भाव मुहब्बत नहीं होने पावें । मैं यहाँ यदि Control न रखूं तो यहाँ रहने वाले मुझे तंग कर दें' । यदि कोई ऐसी वैसी बात होती है तो मैं झाड़ देता हूँ लेकिन इसका यह भाव नहीं कि मैं गिर गया, इसके विना जीवन नहीं है ।

उसके चरन सरोज नमामी, प्रीत रीति प्रतीत दिला कर र

गुरु के चरन कमलों पर क्यों नमामी ? इसलिए कि उसने हमें चिताया, जीने का भेद बताया और भवसागर से पार जाने की विधि बताई । यह बाहर

cut कर दिया है। आपको बिलकुल सरल तरीका बता दिया है।

यह कलयुग है इसमें जन्म लेने के लिए देवता भी तरसते हैं। इसमें यदि बुराईयां है तो एक यह गुण भी है कि इसमें हर काम बहुत शीघ्र होता है। आजकल हजारों मीलों की यात्रा कुछ घण्टों में हो जाती है। कलयुग की यह महिमा है कि इसमें मानव बिना जप तप के और सन्यास के मोक्ष प्राप्त कर सकता है। वह कैसे ?

कलि केवल इक नाम अधारा।
श्रुति स्मृति वेद मत सारा ॥

कलयुग में नाम की महमा है लेकिन तुम लोगों ने नाम को कुछ और ही समझा हुआ है—

नाम रहे सतगुरु अधीना

नाम क्या है ? गुरु तुम को जो बात कहता है तुम्हारे लिए वही नाम है। "गुरु वाक्य मूल मंत्र।" सबके लिए एक ही विधि नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति के गुण कर्म और स्वभाव भिन्न हैं। यह नहीं कि राधास्वामी नाम पांच नाम राम राम या अल्ला अल्ला का जपना नाम का जपना है किन्तु यह नाम नहीं है। स्वामी जी ने कहा है।

"जपने में सब गए भुलाई"

मैं चकित होता हूँ कि एक गुरु हजारों चेले बना लेता है और ४०-४० साल तक चेले को गुरु से अपने दुख बताने का समय नहीं मिलता। यह कहां का गुरुवाद है ? इसलिए जो व्यक्ति जिज्ञासु हैं और सच मुच अपने घर वापस जाना चाहते हैं उनके लिए आया हूँ और उनसे कहना चाहता हूँ कि मुझे रुपए देने से या मेरा मंदिर बना देने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं हो सकता। लेना देना तो संसार का व्यवहार है मगर अपना और अपने बच्चों का पेट काट कर किसी को मत दो। यदि पार जाना चाहते हो तो गुरू की सेवा करो। गुरू की सेवा क्या में।

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कर अहार पुष्ट हुआ भाई । जग भव भये सब गये गंवाई ।

यह है गुरु की सेवा । आप लोग आ जाते हैं । जो कर्तव्य मुझे सौंपा गया है मैं उसको अपने कर्म भोग वस ठीक ढंग से पूरी कर जाना चाहता हूँ । यदि आपको इससे लाभ पहुँच जाए तो बहुत अच्छी बात है ।

जाके गुरु के पास बैठो और वचन उनके सुनो,
जो सुनो उसको विचारो जो विचारो वह गुनो ।
सुन के गुन के नित करो बचनों का उनके तुम आहार
निश्चिन्त होकर साधना से करलो सब साक्षातकार

ये मन महान चंचल है, तुमको क्या कहूँ मैं८८ साल का होगया। शरीर भी निर्बल है और मन भी निर्बल है । मैं कई बार गिर जाता हूँ । रात को एक स्वप्न देखा । एक नवयुवक लड़की मुझे वश में कर रही थी । बड़ी कठिनता से जान बचाई । ऐसी बातें सबके साथ होती हैं । क्यों ऐसा होता है ? ये बचपन के मेरे काम अंग के संस्कार है । परन्तु स्वप्न में एक स्त्री आई । वह नरमा (कपास) लाई । वह उसको बेचना चाहती थी । वह सात रुपये माँग रही थी, और मैं पांच रुपये दे रहा था । ये स्वप्न क्यों आया ? मदरसा (एक स्थान का नाम है) में मेरी दुकान थी । वहाँ स्त्रियां कपास लाती थी और सौदा ले जाती थी । वही संस्कार मस्तिष्क पर पड़े हुए हैं । इन संस्कारों को साफ करना महान कठिन है । हम लोग दूसरों को उपदेश करते हैं मगर अपनी बात कोई नहीं बताता । मैंने हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज को तीन पत्र रजिस्ट्री करके भेजे थे । उनमें मैंने लिखा था, कि मुझे स्वप्न आते हैं । क्या आपको भी आते हैं ? अगर आते हैं तो किस प्रकार के आते हैं । लेकिन मुझे उत्तर नहीं आया । ऐसी घटनायें सबके साथ होती हैं किन्तु कोई बताता नहीं । यदि ये महात्मा लोग सच्चाई वर्णन करें तो पैसा नहीं आता ।

तुमको जो कुछ मिलता है, वह तुम्हारे ही विश्वास का फल मिलता है । एक स्त्री को बच्चे ने अपनी मां माना था । उसके दिल में उस

बात नहीं आएगी कि उसकी माँ का उसके बाप के साथ क्या सम्बन्ध है। इसलिए गुरु में कभी कोई अवगुण मत देखो। सबमें कोई न कोई अवगुण या बुराई होती है। यदि अवगुण या बुराई नहीं हैं तो तुम्हारी नेष्टा में नहीं है। बच्चा अपनी मां में कोई अवगुण नहीं देखता। दूसरा आदमी उस स्त्री को अपनी बहिन समझता है और उसका पति उसको अपनी स्त्री समझता है। उन सबके भाव उस स्त्री के लिए भिन्न २ होंगे। इसलिए हरेक आदमी को उसके अपने ही भाव और विश्वास का फल मिलता है। मेरी सफलता का यही भेद है कि मैंने हजूर दाता दयाल जी महाराज की ज़ात में उस मालिक को माना था। मैंने कभी यह नहीं देखा कि उनके कितने बच्चे हैं या वह क्या करते हैं। यह है नेष्टा। या तो गुरु की ज़ात को समझो या मेरी तरह विश्वास करो क्योंकि मन चंचल है, इसलिए आदमी को सुमरिन और ध्यान दिया जाता है। चलते फिरते बैठते उठते अपने आपको (watch) किया करो।

मैंने अपनी कमजोरियां बिलकुल स्पष्ट शब्दों में वर्णन की हैं। दूसरा कोई महात्मा या कोई भी आदमी अपनी कमजोरियां वर्णन नहीं करता। लेकिन मैं छुपा कर कुछ नहीं रखता और अपनी आत्मा को बिलकुल स्वच्छ ले जाना चाहता हूँ ताकि मुझको गुरु बनने का कोई पाप न आए। गुरू नाम है ज्ञान का समझ और बिवेक का, श्रद्धा और विश्वास का, और प्रकाश और शब्द का। मैं गुरू नहीं बना। परन्तु गुरू का काम कर चला। मैं किसी को यह नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो लेकिन यदि तुम करते हो तो उस रूप को पूर्ण मानो और सब कुछ देने वाला मानो। मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं हूँ लेकिन लोगों के काम हो जाते हैं। जहाँ तुम्हारा विश्वास है उसका रूप बनाओ और उसको पूर्ण मानो। मगर हम लोग क्या करते हैं? जब स्वार्थ होता है तब हम खुशामद करते हैं। और यदि स्वार्थ नहीं होता तो हम परवाह नहीं करते।

दुख में सब सुमिरन करें, सुख में करे न कोय।

मित्रो ! मेरे जीवन ने पलटा खाया। मैंने बड़े २ महात्माओं की जीवनियाँ देखी और शब्द अभ्यासियों के हाल देखे। कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। यदि हजूर दाता दयाल जी महाराज मुझे इस काम को करने की आज्ञा न देते तो मैं यह काम कभी न करता। उनकी आज्ञा अनुसार मैंने शिक्षा को बदल दिया है कि ये ए मानव ! तुमको तुम्हारे कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ेगा। इसलिए अपने निज स्वार्थ के लिए किसी से छल कपट या हेराफेरी मत कर। आज कल भारत में जो कुछ हो रहा हैं इसका परिणाम तुम देखोगे। मैं जब इसके परिणाम को देखता हूँ, तो मेरी जान कांपती है। मैं जो कुछ कहता हूँ यह मेरा अनुभव है। गलत है या ठीक है इसका मुझे पता नहीं। सत लोगों को प्रसाद दे देते हैं कि जा ! तेरे पुत्र हो जाएगा या तेरी बीमारी ठीक हो जाएगी लेकिन उनके अपने साथ क्या बीती ? इसलिए अपनी नियत को स्वच्छ रखो। जो पहले कर चुके हो, उसको तो भोगना ही पड़ेगा। लेकिन आगे के लिए अपने कर्म को खराब मत करो। अब मुझे मूत्र का थोड़ा बहुत कष्ट रहता है। किसको दोष दूँ ? अपने ही कर्म का फल है। ये मेरी छोटी आयु के बिवाह का परिणाम है। फिर भी अच्छा है कि अपनी आयु के अनुसार बहुत ठीक हूं।

तुम लोग आते हो तो मुझ से कुछ ले जाओ और अपना जन्म बनाओ। यूँ तो जगह २ सत्संग होते हैं और लाखों लोग एकत्र होते हैं किन्तु यह भेड़ चाल है। तुम लोग आए हो मेरी बात को ध्यान से सुनो, सोचो, समझो और उस पर आचरण करो, तब तो तुम्हारा आना और मेरा कहना कुछ सफल होगा अन्यथा मैंने भी अपना समय नष्ट किया और तुमने भी। यद्यपि तुम लोगों के आने से मन्दिर में पैसा आता है जिन्तु मैं किसी को धोखे में रख कर पैसा लेना नहीं चाहता। बिलकुल सच्ची बात बताता हूँ।

लोग मेरे बारे में बहुत कुछ कहते हैं कि आपने हमारे अन्तर प्रकट होकर यह कहा और यह काम कर दिया आदि आदि। लेकिन सच्चाई यह है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और ना ही मुझे कोई पता होता है।

और कहने लगी कि बाबा जी। यह लड़का आपके प्रसाद से हुआ था। लड़के कीआयु नौ दस साल की थी। अब मैं अपने आप से प्रश्न करता हूँ की फकीर ! क्या तेरे प्रसाद से यह लड़का हुआ ? यदि मेरे प्रसाद से किसी के लड़का पैदा हो सकता है तो मेरी लड़की के भी जिसको मैंने कई बार प्रसाद दिया है लड़का पैदा हो जाता। आग लगे ऐसी गुरकाई को। यदि पैसा आगया तो क्या होगया। यदि चेले बना लिए तो क्या होगया। यह सब जीव का ही अपना विश्वास है।

This is either your faith or your fate.

मेरे पास कुछ है तो सच्चा ज्ञान है, जो मैंने सारा जीवन परिश्रम करने के बाद प्राप्त किया है। मैं सोचता हूँ कि मेरी कही हुई बात कैसे पूरी हो जाती है ? यह मेरा प्रालब्ध कर्म है मुझे यश मिलना था, जीवन में बहुत मिला या यह बात है कि मेरा अन्तर और बाहर स्वच्छ है इसलिए होने वाली बात स्वाभाविक ही मेरे मुंह से निकल जाती है। यदि मेरे वश में होता तो में मामचन्द को या अपने छोटे भाई को राजी कर लेता। मैं कुछ नहीं कर सकता। अब तो हजूर दाता दयाल जी महाराज से प्रार्थना है।

औगन हारा गुन नहीं, मनका बड़ा कठोर।
ऐसे समरथ साईयां, मोहे लगाओ ठौर ॥
पाप किए तो बहु, किए करत न मानी हार।
भावें बन्दा बखशीए, भावें गरदन मार ॥

ये मेरा कर्म भोग है। जो समझ में आया या अनुभव किया वह बताता रहता हूँ।

महर्षि शिव की शिक्षा तथा उपदेश (संकलित)

(१६) कोई यह न समझे कि कोइ इसके पाप नहीं जानता। यह मनुष्य की भूल है। पापी आदमी का असली शत्रु उसका पाप है। वह स्वयं जानता है कि मैं पापकर रहा हूँ। यह विचार न केवल उसको दुर्बल बना देता है किन्तु उसके स्वास्थ्य, उसकी बुद्धि और भावों को दूषित रक्खेगा।

(साधू की सदा से)

(१७) सवाल है कि लोग बीमार क्यों रहते है! सच तो यह है कि यह बीमारी नित्य की बीमारी उनकी सम अवस्था में न रहने की बुराइयों और कुकर्मों की सजा है (साधू की सदा से)

(१८) अज्ञानी अपना समय या तो नींद में गंवाते हैं या लड़ाई झगड़े में गंवाते हैं।

(१९) दुनियां में ऐसे आदमी कम हैं जो अच्छी बात सुन कर स्वयं ग्रहण करलें। बीमार लड़कों को दवा दी जाती है मगर वह खुशी से नहीं खाते। लेकिन जब कोई चतुर वैद्य उस पर शहद या शक्कर लगाकर देता है तो वह तुरन्त मुंह में रख लेते हैं। यही दशा उपदेश की भी है। जो कोई बात सीधे सादे ढंग पर कहीं जाती है तो अज्ञानी उसे मामूली समझ करे उस ओर ध्यान नहीं देते। जिनको थोड़ी बहुत समझ है वह कह उठते हैं कि इसमें फिलोस्फी का नुक्ता नहीं। मगर साधू जानते हैं कि दोनों ही गलती पर हैं। असली सुन्दरता तो केवल सादगी में है।

(साधु की सदा से)

(२०) यह संसार भी एक तरह का शहद का प्याला है जिसे भोगने के लिये तीन प्रकार के आदमी इसके चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं। पहिले प्रकार के साधू और भक्त जन हैं जो आवश्यक्तानुसार उससे लाभ उठाकर अलग थलग रहते हैं। दूसरे संसारी जीव हैं जो दुख सुख के अनुभव से असलियत को समझकर सावधानी से जीवन बिताते हैं। तीसरा प्रकार उन दुनियां परस्त नादानों का है जो लोभ लालच में पड़कर दुनियाँ के भोग

(२१) जहां तरफदारी की जाती है वहां छल कपट की आद आती हैं।

(२२) उपदेश देने के ढंग भिन्न भिन्न होते हैं। जिनको मनुष्य चित्त वृत्तियों का अनुभव है वह अनाप शनाप उपदेश देने के लिये नहीं ख हो जाते किन्तु वह पहिले देखते हैं कि कौनसा पहलू दबा देने से मनुष्य प्रभाव हो सकता है। जब वह अच्छी तरह सोच समझकर काम लेते हैं ि उपदेश दिया जाता है जिससे उद्देश्य पूरा हो जाता है।

(२३) संसार के जितने पदार्थ हैं, उस व्यक्ति के लिये कभी दुखद या बन्धन नहीं बनते जो उनकी असलियत को समझकर उन्हें उतना महत्व देता है जिनके कि वह भोग हैं।

(२४) किसी ने महाराज युधिष्ठर से पूछा कि संसार में सबसे अधि आश्चर्य जनक वस्तु क्या है। धर्मराय युधिष्ठर ने उत्तर दिया कि यह संस स्वयं आश्चर्य का स्थान है। लेकिन इसमें सबसे अधिक अचंभित क बाली वस्तु जो देखने में आती हैं, वह यह है कि लोग अपने भाई बन्धुओं मरते हुये देखते हैं किन्तु इधर ध्यान नहीं देते और इस तरह दुनियां के में फंसे रहते हैं मानो इनके लिये मृत्यु कभी न आयेगी !

(साधु की सदा

(२५) मरना अवश्य है। इसमें किसी तरह का सन्देह नहीं आज नहीं तो कल अवश्य मरेंगे मगर हममें से कम लोगों इसका ख्याल होता है अन्यथा सब किसी न किसी तरंग में मस्त हो रहे

(२६) मिलाप वियोग की तर्क है। निर्माण ढादेने का प्रमाण है, स फैलने का आरम्भ है। आदि स्वयं अन्त का आरम्भ है। जो वस्तु इक होगी फैलेगी, जो जकड़ी हुई है वह बिखरेगी। जो पैदा होते हैं वह मरें जो आये हैं, जायेंगे। फिर यह बन्धन और अधिक आसक्ति किस काम क

(२७) रेलगाढ़ी या धर्मशाला में कितने यात्री मिलते हैं। क्या उ से किसी को किसी का प्रेम सताता है ? कभी नहीं। इसी तरह हम जं

प्रेम भी उचित ही होना चाहिये और हमेशा समझ लेना चाहिये कि हम उनमें से कोई भी नहीं। यह सम्बन्ध क्षणिक हैं इसलिये इनके मेल असलियत को खो देना गलती में पड़ना बड़ी मूर्खता होगी।

(साधु की सदा

(२८) हम सब संसार में आये हैं। कुछ दिन रहेंगे। फिर दुनियां होकर क्यों रहें। क्यों न हमारा चित्त उसके चरणों में लगा रहे जहां अ में जाना है। हम सब के घरों में महमान आया करते हैं। क्या वह हम हो जाते हैं। नहीं। हम भी दुनियाँ में महमान की हैसियत रखते है। फि हम क्यों कर उसके होकर रहें ?

(साधू की सदा

(२९) जिन्दा आदमी वह है जो अपने काम चाहे वह किसी हैसिय और किसी तरह के हों, अच्छी तरह मन लगा कर करे।

(३०) जो व्यक्ति किसी वस्तु से अपने आप को बांधेगा, अल होने पर दुख उठायेगा।

(साधु की सदा से

(३१) संघर्ष की दशा में पड़कर चारों ओर हाथ पाँव मारो औ थोड़े ही दिन बाद तुमको अच्छी दशा प्राप्त होगी।

(३२) जो आदमी जिस काम के योग्य नहीं, वह देर तक उस स्थि में नहीं रह सकता। जो योग्य है वह नीचे की तह में नहीं रह सकता। य प्रकृति का नियम है। इसलिये हममें से किसी आदमी का अनुमान उस काम से न लगाना चाहिये किन्तु यह देखना चाहिये कि वह किस तर अपना कर्त्तव्य पूरा करता है।

(साधु की सदा से

(३३) हम दुनियाँ में भलाई इसलिये नहीं करते कि दुनियां का उपका होगा। किन्तु सीधी बात यह है कि अपना भला करते है। इस परोपका से शिष्टाचार सुधरता है। अनेक गुणों के सीखने का अवसर हाथ आता है हम न दुनियां को कभी लाभ पहुंचा सकते हैं और न उसकी हानि क सकते हैं।

(३४) हर एक व्यक्ति अपने लिये एक अलग दुनियां बना लेता है औ

कठोर और नर्म है। गर्म है या ठंडी है। बूढ़े कहते हैं दुनियां शोकागार है। युवकों को उसमें मस्ती और आनन्द मिलता है। अभिप्राय यह कि हर एक अपनी ऐनक से देख रहा है। जिसकी ऐनक में जैसा रंग है उसको वैसा ही दिखाई पड़ता है। यह दुनियां न बुरी है न भली है।

(३५) दान देने का लाभ यदि किसी को पहुंचता है तो केवल दानी को पहुंचता है। भीख मांगने वाला हमारा ऋणी नहीं, किन्तु हम उसके ऋणी हैं, क्योंकि उसकी सहायता से हमें एक शिष्टाचार का अवसर मिला।

(३६) जो लोग किसी को कुछ देकर बदला ता धन्यवाद चाहते हैं वह नीच हैं।

(३७) जो लोग यह समझते हैं कि उन्होंने दुनियां का उपकार किया, वह अज्ञानी और मूर्ख हैं।

(३८) दुनियां कुत्ते की दुम है जो कभी सीधी न होगी। यह हमारी या तुम्हारी नहीं किन्तु ईश्वर की है। ईश्वर इसका रक्षक और देखभाल करने वाला है। वह कण कण में मौजूद है। जो कुछ दशा तुमको दिखाई, आ रही है वह बिल्कुल कभी दूर न होगी। दूर करने का विचार गलत है। यह कितनी लाभदायक बात है कि तुम इसमें आकर अपने सदाचार व मनुष्यता को ठीक और पूर्ण कर लेते हो, मानो तुम्हें काम करने का अवसर मिल जाता है। (साधू की सदा से)

(३९) जीवन और मृत्यु दोनों एक ही अवस्था के दो अंग हैं। एक विधायक है दूसरा विनाशक है। एक Nagative है दूसरा Positive है। एक में प्रकाश का अनुक्रम है दूसरे में अंधकार का भ्रम है। वास्तव में दोनों एक हैं। केवल समझ का अन्तर है।

(४०) पातंजलि एक जगह कहते हैं कि सच्चे बनो। दूसरी जगह कहते है चोरी न करो। सच्चे बनना और चोरी न करना वास्तव में एक ही बात है। सच बोलने और झूठ न बोलने में कोई अन्तर नहीं। इसी तरह जीवन

संघर्ष न हो। न उन्नति और अवनति की दशा प्राप्त हो।

(साधू की सदा से)

('कानून ख्याल' पुस्तक से उद्धित)

(४१) जो जीव अधिकारी हैं वह फल से कभी वंचित नहीं रह सकते। सम्भव है वह फल उसी समय मिल जाय या उसके लिये हमें हजारों जन्मों का इन्तजार करना पड़े।

(४२) याद रक्खो! दुनियाँ में तुम्हारे कर्म, बचन, विचार और भावों की हर समय रजिस्ट्री होती रहती है। जिस पैमाने से तुम दूसरों को नापते हो, वहीं तुम्हारे नापने में प्रयोग होगा। प्रत्यक्ष देखने वाले चाहे धोखा खा जाय लेकिन वह जो सर्व व्यापक है, हमारे तुम्हारे नस नाड़ियों में रहने वाला है, उसे हर बात का ज्ञान है। उसकी आंखों में तुम धूल नहीं डाल सकते।

(४३) कर्म फल के लिये चिन्तित होना व्यर्थ है। कर्म पौदे की तरह पत्ते और फूल निकाल कर फल देता है। याद रक्खो! वृक्ष में एक दम फल नहीं आते।

(४४) समय की आवश्यक्ता, और समय की मसलहत के अनुसार हर चीज को बदलते रहना बुद्धिमानी का काम होना चाहिये।

(४५) मोह सम्पूर्ण रोगों की मा है।

(४६) सुस्त न बनो! संघर्ष में हर समय हाथ पांव मारते रहो और कर्म योग के असली प्रयोजन को सोचो।

(४७) गुरु सच्चा है, निस्वार्थ है। उसके अनुभव अपेक्षाकृत विस्तृत हैं सम्भव हैं उसकी बहुत बातें तुम्हारी समझ में न आयें। इसलिये उनको आगे के लिये सोच विचार को छोड़ दो।

(४८) ज्ञान प्राप्त करने की तीन विधि हैं—(१) श्रवण, मनन और निदिध्यासन (सार बात तक पहुँच कर उस पर स्थित रहना)

(४९) जो बात तुम सुनो, उसको ध्यान से सुनो ताकि वह मन में ठहर जाय और [illegible]

अथवा जिसमें किसी प्रकार की मिलावट हो, उसको छोड़ दो। जो सच्ची है उसे ग्रहण करो और उसे पचा लो ताकि वह तुम्हारे मन का, देह का अंश बन जाये। इस तरह काम करने से आत्मा को बल, मन को दृढ़ता मिलेगी और विचार में वृद्धि होती जायगी।

(५०) उच्चकोटि की आत्मा वह है जो दूसरों को उपदेश करती रहती हैं कि अपने अन्दर प्रवेश करके देखो, जहाँ तुम्हारे मन में असलियत का दृश्य मौजूद है।

(५१) हम इस ब्रह्माण्ड का अंश हैं या रचना के मिलाप की लगातार जंजीर की कड़ियां हैं, जो एक दूसरे से मिली जुली रहती हैं। खेंचतान में रहने में वह चिकनी और सुन्दर बनी रहेगी अन्यथा जग खा जायगी।

(५२) प्रकृति के प्रबन्ध (निजाम) के निश्चित सिद्धान्त के अनुसार जीवन में अपने मिशन को समझ कर काम में लग जाओ। अपने अन्दर घुस कर उसका ज्ञान प्राप्त करो और बाह्य ज्ञान से सहायता लेकर उसे खूब समझकर अपना कर लो वर्ना वह भी तुम्हारे फंसाने की जंजीर बन जायगी और तुम्हें कहीं का न छोड़ेगी।

(५३) शब्दों की पूजा न करो। केवल उनके सार भाव को समझो। शब्दों के गोरखधंधे में आया हुआ मनुष्य उस हिरन की तरह तड़प तड़प कर जान देता है जो प्यास की तेजी से सूर्य की किरणों को पानी समझ कर अंधाधुंध दौड़ता हैं।

(५४) वह लोग असलियत तक कम पहुंचते हैं जो किसी जोशीले वक्ता की बातों की बाढ़ में बह जाते हैं। हममें सोचने विचारने की आदत होना चाहिये। जब मनुष्य को ईश्वर ने बुद्धि दी है तो उसका काम में न लाना पाप है।

(५५) जीवन का गीत सुहाना है मगर उसका आनन्द उनको मिलता है जो धीरे धीरे मँजिल के निकट पहुंचते जा रहे हैं। (कानून ख्याल से)

(५६) कोई यह न कहे कि वह समय के मेलमिलाप के प्रभाव में नहीं आया। हर व्यक्ति है। सबको समय का लोहा मानना पड़ता है।

कहानी—

जाम तमाची और नूरी

(लेखक—महर्षि शिव ब्रतलाल जी महाराज)

किसी समय में जाम तमाची नामी सोम वंश का क्षत्री राजा सारे सिंध पर राज करता था। एक दिन वह नाव पर बैठा हुआ कंभर झील पर आया। उसके किनारे मुहाना जाति के माँझी डेरा डाल कर रहते थे। यह प्रतिदिन मछलियाँ पकड़ते और बाजार में लेजाकर बेच दिया करते थे यही उनका पुराना उद्यम था। मैले कुचैले इतने थे कि घृणा होती थी इनकी स्त्रियां साधारणरूप से कुरूप और मैली थीं। तरह तरह के शारीरिक रोग इनको लगे रहते थे। किसी किसी की तो यह दशा थी कि युवा अवस्था में ही बूढ़ी हो जाती थीं। जिस ओर से जाती थीं उनकी दुर्गन्ध से लोगों का दिमाग भर जाता था। कपड़े लत्ते बर्तन भांडे अर्थात् उनकी हर एक चीज से मछली की दुगन्ध आया करती थी। यदि गलती से कोई व्यक्ति उनकी किसी वस्तु को हाथ लगा देता था तो सड़ी हुई मछली की दुर्गन्ध कुछ इस तरह इसकी नाक में समा जाती थी कि दिन भर चैन नहीं मिलता था। उनके डेरों के चारों ओर मीलों तक सड़ायध फैली रहती थी। मुहाने लड़के लड़कियाँ भी ऐसे ही थे—गंदे, मलीन और कुरूप! ईश्वर जाने वह किस प्रकार के लोग थे जिनके अन्दर सफाई नाम मात्र को भी नहीं थी लोग कहा करते थे—मोहाने मनुष्य नहीं किन्तु पशु हैं। इसका कारण यह था कि वह रात दिन पानी में रहते थे। तैरने में तो यह कमाल था कि ऊदबिलाव तक उनका मुकाबला नहीं कर सकता था, यद्यपि वह पानी का पशु कहा जाता है और नदी किनारे रहता है। यह पशु तक उन लोगों से अच्छे थे, क्योंकि स्वाभाविक ही मैले नहीं थे।

लेकिन इनमें एक मुहाना लड़की नूरी नाम की बड़ी सुन्दर और स्वच्छता प्रिय पैदा होगई थी। वह मुहाना जाति के तालाब की कमल थी। सुन्दर, अच्छा रंग ढंग! प्रसन्नचित्त! जितने यह लोग मैले रहते थे, उतनी ही स्वच्छ रहती थी। उसके दोनों नेत्र दीपक की तरह दीप्त थे

रूप की निर्मलता रंगीन गुलाब के फूल के समान थी। विश्वभर में उस जैसी लड़की एक भी नहीं थी। उसके शरीर से न दुर्गन्ध आती थी न उसके वस्त्र मैले रहते थे। वह राज महल की राजकुमारियों की तरह साफ सुथरी रहती थी। साथ ही अत्यन्त सीधी सादी और शर्मीली थी

जिस समय जामतमाची अपनी नाव पर उधर से गुजरा, नूरी झील के किनारे खड़ी थी। राजा ने उसे देखा और देखते ही नूरी के रूप का प्रभाव उसके हृदय में चुभ गया। और माँझी की लड़की की आँखों ने चुम्बक बन कर राजा के दिल रूपी लोहे को अपनी ओर खेंच लिया और उसे अपना दिल दे बैठा। वह अपने आपे से जाता रहा।

इश्क या प्रेम संसार में बुरी बला है। यह जिस पर चढ़ छाता है फिर अपना ही बना लेता है। राजा बुद्धिमान था। देर नहीं की। नूरी के माँ बाप को बुला भेजा और नूरी के साथ विवाह करने की इच्छा प्रगट की। माँझी प्रसन्न हुए। उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। सिंध का राजा मुहाना लड़की से विवाह करे, इससे अधिक सौभाग्य की बात क्या हो सकती थी। सब मांझी दिल से खुश हुये। राजा ने उनकी जाति का मान बढ़ाया।

जाम तमाची ने अपना खजाना खोल दिया। हीरे, जवाहरात, सोना, चाँदी आदि अधिकता के साथ माँझियों में बाँट दिया कि वह मालामाल होगये। इसके बाद उसने नूरी को साथ लिया। महल में लाया। विवाह किया और अपनी रानी बनाली। नूरी होने को तो रानी होगई राजा भी उसे बड़ा प्रेम और आदर करता था लेकिन उसकी सादगी, शर्मीलेपन में अन्तर नहीं आया। यदि कोई चापलूसी से उसकी प्रशंसा करता तो वह उत्तर देती थी— "मैं क्या हूँ ! केवल एक निर्धन मांझी की लड़की हूँ। राजा के साथ मेरी क्या तुलना है। मैं उसकी रानी होने के कब योग्य हूँ। यह उसकी महानता है कि मुझे नीचे से उठा कर ऊंचे पर पहुंचा दिया"। जब राजा स्वयं उसकी प्रशंसा करता तो कहती कि "मुझमें अवगुण भरे हैं। आपकी रानियों के मुकाबले में मैं कोई चीज नहीं हूँ। वे मुझ से हजारों गुना सुन्दर हैं। फिर भी मैं जितना तुम्हें प्रेम करती हूँ उनमें से कोई भी प्रेम नहीं

करती ।"

एक दिन जाम तमाची की इच्छा हुई कि नूरी की और रानियों के साथ परीक्षा की जाय । उसने अपनी कुल रानियों को कहला भेजा । "मैं आज सैर को जा रहा हूँ । तुमको जो पहिनावा जिसे अधिक सुन्दर और फबता मालूम हो पहिन कर आओ । इस समय जो रानी सब से अधिक सुन्दर दिखाई पड़ेगी उसी को अपने साथ सैर में ले जाऊंगा ।" सोमवंशी रानियों ने अपने आपको संवारा और रूप के गर्व में मस्त होकर उस जगह आईं जो उनके उपस्थिती के लिये नियत थी किन्तु नूरी की दशा इनके प्रतिकूल थी । उसने मांझी लड़की के साधारण वस्त्रों को अधिक अच्छा समझा और उसी तरह की सादी सस्ती लेकिन साफ साड़ी पहनकर आई जो रानी होने से पहिले पहिना करती थी, जिसे देख कर राजा अपना दिल दे बैठा था । उसके शरीर पर न हीरे जवाहरात थे न गर्दन में जंजीर और हार, न उंगलियों में अंगूठियाँ । लज्जा के साथ वह अपने रथ से नीचे उतरी । उसका हृदय प्रेम के भाव से भरा हुआ था । आँखें प्रेम की ज्योति से चमकती हुई राजा की शकल की ओर आकर्षित थीं । दूसरी रानियों ने उसका रंग ढंग देखा । घृणा की । आखिर वह माँझी ही की तो लड़की थी । उनकी दृष्टि में उसे जेवर और पोशाक पहिनने की योग्यता कब आ सकती थी । वे पहिले ही से गर्वीली थीं । अब उन्हें और भी अधिक गर्व होगया । सोचा—"कब सम्भव है कि जाम तमाची उनकी अपेक्षा में नूरी को मान्यता देगा ।" लेकिन जब राजा की दृष्टि नूरी पर पड़ी, उसने देखा कि नूरी की आंखें प्रेम के प्रकाश से विशेष रूप से चमक रही थीं । वह साधारण वस्त्र उसके तन पर पड़ा था, जो विवाह से पहिले उसने पहिन रक्खा था जिसे देखकर वह मोहित होगया था । उसने सोमवंशी रानियों की ओर देखा तक नहीं । हाथ उठाये हुये सीधा उसके पास आया । उसे सैर में अपने साथ लिया । सैर के बाद साथ लिये हुए उसके महल में आया । दूसरी रानियों के क्रोध की दशा कुछ न पूछो । वह रोती हुई अपने अपने

नहीं की। नूरी को अपनी पटरानी बनाया। जँझर का कुल क्षेत्र उसके रिश्तेदारों को बतौर जागीर के दे दिया।

लावनी

दिल में शान दिलवर आई जब, तब वह दिलदार बना।
दिल देने वाला मैं ठहरा, वह दिलवर होशियार बना॥
मुझ में दर्द व गम व आलम थे, वह सच्चा गमख्वार बना।
वह तबीब की शकल में आया, जिस दम मैं बीमार बना॥
वह मेरा है मैं उसका हूँ, मैं आशिक वह यार बना।
आकर मुझे दिखाई सूरत, मैं तालिब दीदार बना॥
वह वाहिद वह जमा, जरब, तफरीक हुआ तकसीम हुआ।
इल्म का ऐन लाम वह मेरे, और आखिर में मीम बना॥
मेरी तग नजरों में वह, खुद दौलत और सीम हुआ।
जब वह मेरा हुआ दूर, तब दिल ही खौफ और बीम हुआ॥
बेखौफी से उसके इश्क का, नाम दिया सरसार बना।
आकर मुझे दिखाई सूरत, मैं तालिब दीदार बना॥
वह है कौन-कौन हूँ मैं, जहाँ जात व सिफात का धोका है।
वह कालिब में नजर है सब के, जाति पाँति का धोका है॥
किसी किसी की जुबां पर आया, नफी असबात का धोका है।
बहम व गुमाँ में पड़े सभी हैं, बात बात में धोका है॥
वहदत में कसरत जब आई, पाँच सात दो चार बना।
आकर मुझे दिखाई सूरत.....॥
मैं जुज व कुल-जर्रा मैं, वह आफताब की सूरत है।
मुझे बर्गे गुल समझो तुम, और वह गुलाब की है सूरत॥
दरिया जाते अजीम है उसकी, मेरी हुबाब की है सूरत।
मै महदूद लफ्ज की सूरत, वह किताब की सूरत है॥
करम की नजर से देखा उसके, गले का तब मैं हार बना।

आशिक है दिल का नूर, इश्क उसी का सौदा है।
ईश्वर से सिवा गरज नहीं उसको, वह माशूक यह शैदा है।
इश्क की धुन में पक्का होकर, कली कली वह रुसवा है।
आसान नहीं है इश्क समझ लो, जीतेजी मर मिटना है।।
माशूक आया गले लगाया, आशिक जिस दम खबार बना।
आकर मुझे दिखाई सूरत, मैं तालिब दीदार बना ।।

नोट—इस कहानी में प्रेम के बाहरी रूप का दृश्य है। परमार्थी या भक्तों को ऐसे ही प्रेम की आवश्यक्ता है। प्रेम छिपाने से नहीं छिपता। प्रेमी तो प्रेम में रंग जाता है।

प्रेम छिपाये ना छिपे, जा घट प्रगट होय। —सम्पादक

रुबाई

वे फायदा है यह सारा रोना धोना।
हसरत[1] का बीज किश्ते दिल[2] में बोना।।
पैदायश ब मर्ग[3] और के हाथ में है।
होने दे हो जाये जो कुछ है होना।।

लेना नहीं एक और देना न हो दो।
हो फर्ज अदा कर्ज किसी से नहीं लो।।
हल्के रहो है खैर इसी में 'नैयर'।
दुनिया है बोझ, बोझ से तुम न दबो।

क्या रूह है दिल जिस्म हैं क्या दुनियाँ है क्या।
और दुनिया से मरे पीछे यह उक़बा है क्या।।
वापिस न अदम से कभी आया कोई।
जो कहता मर जाने पे होता है क्या।।

प्रवचन

परमदयाल फक़ीरचन्द जी महाराज

(मिलाई १-२-२-१९७५)

हर एक मनुस्य की कुछ इच्छा है। वह कुछ चाहता है। वह जाने या न जाने मगर उसके अन्दर किसी वस्तु की खोज है। यह स्वाभाविक भाव है। शुरू से ही तबीयत सचाई पसन्द थी। १५-१६ वर्ष की आयु थी। बुरी संगत में पड़ गया। कुछ भोग था। छः महिने मांस खाया। तीन बार मदिरा पीई। मन में ग्लानि आई। बड़े भाई के पास गया। सन् १९०४ की घटना है जब कांगडा में भूचाल आया हुआ था। सर्दी की ऋतु थी। सुबह उठे। न्हाये। वह रामायण भागवत पढ़ा करता था। मैं सुना करता था। उस समय मेरे मन में ख्याल आया कि मैं किधर जा रहा हूँ और मेरा मौसी का लड़का किधर जा रहा है। मन में ग्लानि पैदा हुई। उस समय ख्याल आया कि मुझे ऐसा राम मिल जाय जैसा कि रामायण में लिखा है--'नाना भांति राम अवतारा। रामायण शत कोटि अपारा॥' मैं सोचा करता कि मुझे भी ऐसा राम मिल जाय तो मैं अपने पाप धो डालूं। उस वक्त में मैं दीवाना हुआ था। एक दिन २४ घंटे लगातार रोता रहा। उसके बाद मेरा जो इष्ट था तो दाता दयाल सत्गुरु महर्षि जी का रूप सामने आया। सन् १९०५ में उनके चरणों में लाहोर गया। उन्होंने मुझे सन्त मत या राधास्वामी मत का नाम दे दिया और पोथी 'सार बचन' पढ़ने को दे दी। दिल के अन्दर एक लगन थी कुरेद थी। इन बाणियों में सब मत मतान्तरों का खंडन था। राम भी काल के अवतार। कृष्ण भी काल के अवतार। भक्त भी वहां नहीं पहुंचे। उपासक योगी, ज्ञानी भी वहां नहीं पहुंचे। यह सब पोथी 'सार बचन' में लिखा हुआ है। उस समय मैंने प्रण किया था कि मैं सच्चा होकर इस मार्ग पर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बताऊंगा।

।। मनुष्य बनो ।।

'सारबचन' और कबीर साहब की बाणी पढ़ने से मुझे सन्त मत की शिक्षा का पता नहीं चलता था। दातादयाल से पूछता। कहते सेवा करो। मैंने सेवा की। समाधियां लगाई। बीन सुनी। सारंग सारंग सुने। बड़े बड़े दृश्य देखे मगर वह वस्तु मुझे नहीं मिली जो मुझे विश्वास दिला दे कि यह सन्त मत सबसे बड़ा है। उस काम से मैंने बड़े बड़े शब्द सुने। सेवा भी बहुत की। सोने का ताज बनाया। चाँदी का हुक्का बनाया। बड़ा प्रेम किया। मैं दातादयाल के दरबार में रोया करता था कि मुझे वह चीज बताओ जो सन्त मत कहता है। वह धुर घर क्या है? एक दिन मैं लगातार रोया। सार बचन में से एक शब्द आया—गुरु मोहि अपना रूप दिखाओ। यह भी रूप पियारा मुझको, इस ही से मोहि उसको समझाओ।

मैं सन् १९१५ में बसरा बगदाद से छुट्टी लेकर आया। मेरा दीवानापन यह था कि छुट्टी में मैं घर नहीं जाया करता था। छुट्टी आया मगर घर नहीं गया। सतगुरु के दरबार में रह कर चला गया। सन् १९१८ ई० में मैंने उन्हें बहुत तंग किया वहां बैठूं तो वहां कहूं कि मुझे वह रूप दिखाओ। जहां जायं तो वहां कहूं। उन्होंने कहा कि सुबह तुमको उस घर का पता दूंगा। तुम में से सन् १९१८ का शायद कोई हो। जब सुबह मैं उनके पास गया तो उन्होंने पांच पैसे और एक नारियल मेरी गोद में डाल दिया और मेरे पांव को मत्था टेक दिया। बोले फकीर! मैं तुमको काम देता हूं। मेरा कहा मानो। तुमको वह भेद मिल जायगा। तुमको सच्चा सतगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। तुम भी तर जाओ और पबलिक को भी तार जाओ। मैंने गुरु पदवी पर आकर जो कुछ देखा, उससे मेरी आंख खुल गई। सन्त मत की सचाई का पता चल गया। उस सचाई को देने वाले यह सतसंगी हैं। मेरे जिम्मे यह तीन ड्यूटी हैं—(१) उन्होंने मेरे नाम में लिखा हुआ है—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा।।

तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।

(१) मेरे बारे में लिखा है—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही ।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही ॥

(२) ले प्रसाद यह सत संगत का, होजा भव निधि तारन ॥

चूंकि मेरे जिम्मे यह तीन ड्यूटी हैं इसलिये मैं दाता दयाल के चोला छोड़ने के बाद यह काम करता हूँ । दाता दयाल जी मुझे सन् १९३३ ई० में कह गये थे कि जमाना बदल जायगा । धर्म सम्प्रदाय भी खतम हो जायेंगे, तुम चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल जाना । मैं सचाई पसन्द इंसान हूँ यदि मैं सच कहूँगा, यह सन्त मत वाले मेरे विरोधी हो जायेंगे । मैं सन् १९४२ ई० में बाबा सावनसिंह जी के पास व्यास गया । कुर्सी पर बैठे हुये थे । मैं जमीन पर बैठा और मैंने अपना सारा दुखड़ा सुनाया कि मैं कैसे पंथ में आया । मैंने क्या समझा । मैं काम नहीं करना चाहता । कहने लगे क्यों ? मैंने कहा कि मैं सचाई बयान करूंगा । उन्होंने कहा कि फकीर मुझ से सच नहीं कहा गया क्योंकि एक तो जीव अधिकारी नहीं हैं । दूसरे मेरा डेरा है । तुम निर्भय होकर काम करो । मैं तुम्हारी पीठ पर हूं । फिर मैंने यह काम किया ।

अब आप मेरे पास आये हैं । मैंने अपनी वजह बता दी कि मैंने ८८ वर्ष की आयु तक यह काम क्यों किया । बुढ़ापा हैं । चलने फिरने में कष्ट । वसन्त पर सत्संग हनमकुंडा में होता है । वहां जा रहा हूँ । आप लोग आये हैं । मैं वह भेद दे जाना चाहता हूँ । वह भेद क्या हैं जो सन्त मार्ग में बड़ा ऊंचा बताते हैं । यह एक सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं । ऐ मानव ! तुझे जो कुछ मिलेगा, मिलता है, मिला है, यह सब तेरा अपना कर्म है । यह भेद मिला । कैसे मिला ? मैं क्यों ऐसा कहता हूँ । मेरे पास चिट्ठियाँ आती हैं जो लोग मेरा सत्संग सुन जाते हैं और उस कहने पर अमल करते हैं, उनको लाभ होता हैं । मेरा रूप उनके अन्दर प्रगट होकर जाग्रत में, स्वप्न में, समाधि में उनके काम कर जाता है । मैंने

यह सुना मगर मैं नहीं होता । ऐसे ऐसे चमत्कार मेरी जिन्दगी में सत्संगियों की चिट्ठियों से या जुबानी सुनने में आये । सत्संगी लोग विवश करते हैं कि उनको प्रकाशित कराऊं । यदि मैं उनको प्रकाशित कराऊं तो बड़ी भारी पुस्तक बन जाय । मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मुझे कोई पता नहीं होता । इससे मैं इस परिणाम पर आया कि मनुष्य का अपना ही विश्वास है और श्रद्धा है । जैसी जिसकी श्रद्धा है उसके अनुसार उसके काम बनते हैं । न कोई बाहर का राम आता है न कृष्ण आता है । न कोई देवी देवता आता है न कोई गुरू आता है । यह सब मनुष्य का अपना ही विश्वास है । अपने ही कर्म का फल है । यह मेरी समझ में आया । फिर मैं सोचता हूँ कि इस विचार के प्रगट करने का लाभ क्या ! इसका लाभ यह है कि हम जीव निबल, अबल अज्ञानी हैं । किसी के अन्तर में मेरा रूप प्रगट होगया या बाबा सावनसिंह का होगया या राम का होगया या देवी का होगया । चूंकि वह अज्ञानी है, उसको पता नहीं वह अज्ञान से अपना पैसा लेजाकर डेरे में देगा, होशियारपुर में देगा, आगरे में देगा । परिणाम यह निकला कि लोग लुट गये, इन धर्म सम्प्रदाय और पंथों ने और हम गुरुओं ने मूर्ख बनाया । मनुष्य की आँखों में अज्ञान की मिट्टी डालकर इनको लूटा । चूंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी है निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करना, इसलिये मैंने इस भेद को खोल दिया । सचाई प्रगट करदी ताकि भोले भाले जीव अज्ञान में आकर हम महात्माओं के चंगुल में न फंस जाँय । देने को मैं देता हूँ । मैंने जीवन भर दिया । समझदार आदमी मुझे भी देते हैं ।

ऐ इंसान ! पहिले कुछ दिन तू सत्संग कर, बात को समझ, अपने मन पर काबू करने की कोशिश कर । यह जितने दृश्य तेरे अन्दर आते हैं तेरे अपने ही मन का विश्वास, श्रद्धा और कर्म का फल हैं । यह मेरी समझ में आया ।मैं यदि पर्दा रखता तो आज मैं करोड़ों रुपये का मालिक होता । मेरा रूप अमेरिका, यू० के० अफ्रीका और विभिन्न देशों के लोगों के अन्तर प्रगट होता है । उनकी सहायता कर जाता है । लोग मरते हैं । वह कहते हैं कि

का नम्बर भी बताकर चले गये। जिन लोगों ने मेरे लड़के को कहा कि सत्संग कराओ, मैं उनको कहना चाहता हूँ। गंगा बह रही है। नहा लो। गंगा जल से तुम्हारा बाहिरी तन का मैल साफ होगा। मेरे बचनों से तुम्हारे मन के भ्रम और संशय दूर होंगे। मेरे पास ऐसे ऐसे पत्र आते हैं। एक आदमी लिखता है कि मैं सफर में जा रहा था। वहां मैं गिर गया। उसके अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ। वह लिखता है कि बाबा जी! आपने सहस्र दल कंवल के ऊपर तक सब देवी देवता सामने बिठा कर दिखा दिये मगर मुझे कुछ पता नहीं।

एक डा० जंगजीत सिंह जो पंजाब का फायनेन्स मिनिस्टर था। वह किसी समय से सुरत शब्द का अभ्यासी है। मेरा तो चेला नहीं। उसने मुझको इंगलैंड से लिखा। मुझे तो पता नहीं कि वह वहां था। वह लिखता है कि बाबा जी! आप सुबह पांच बजे मेरे मकान पर आये। उसने कुछ सवाल किया तो आपने मुझ को कहा कि तू सिख होमलेंड के लिये काम कर। पहिले मैं यह समझता था कि मेरा रेडीयेशन जाता होगा मगर डा० जगजीत की चिट्ठी में लिखा है कि आपने कहा कि बैसाखी आ रही है। बैसाखी के पर्व पर कुछ मदद कर। उसने अपनी स्त्री को टांडा में लिखा कि बाबा जी को पैसे दे आओ। वह स्त्री मेरे सत्संग में आई और १०१) रु० देगई। पहिले मेरा विश्वास था कि रेडीयेशन का कानून काम करता है। अब क्या मेरे दिमाग में यह ख्याल आ सकता है कि सिख होम लेन्ड बन जाय? नहीं। तो मुझे निश्चय होगया कि ऐ मानव! तेरे अन्दर जितने भी दृश्य दिखाई देते हैं या जिस प्रकार के विचार अन्तर में पैदा होते हैं, वह संस्कार हैं जो तुम्हारे मस्तिक पर प्रारब्ध कर्मों के अनुसार, कुछ पुस्तकों के पढ़ने से, या कुछ सुसाइटी से पड़े हुये हैं। इसी बात को न समझ कर तुमने देखा होगा कि कितने ही लोगों का दिमाग खराब होगया। तुम्हारे व्यास के सत्संगी अर्ध उन्मत्त हुये हुये हैं। उनमें से एक वह है जो आज यहां बैठा है और कल शाम को मेरे पास आया था।

हुये हैं । यह वह रहस्य है जो मैं पबलिक को सन्त सतगुरु वक्त के
से देता हूँ । सतगुरू का अर्थ है सच्चा ज्ञान । यही राधास्वामी मत अ
नानक मत है । ''जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे न भरम की काई ।''

वही जगजीत सिंह फिर लिखता है कि मुझे दो वर्ष के बाद जब रूस में था, सुवह पांच बजे आप प्रगट हुये और मुझे शब्द योग सिखाय वही जगजीत सिंह मुझ को लिखता है कि मैं कनाडा में हूँ । मैं कना को जा रहा था । छोटे जहाज में तीन आदमी थे । रास्ते में बर्फ पड़ी जहाज फोर्स लेंड (Force land) होगया ।अंधेरा बहुत था । चाबी ह पास नहीं थी । (चाय लाओ) उसने कहा । मैं घबराया तो आपको किया । Light circle सामने आया । उसमें आप बैठे थे । आपने कि यहाँ से दस पन्द्रह कदम आगे जाओ । रैड इन्डीयनस की झोंपड़ियां वहां आराम करलो । दो घंटे बाद दूसरा जहाज आयेगा । वह तुम्हे जायगा । अब वह मुझको लिखता है कि आप कहेंगे कि मैं नहीं ग मैं कहता हूँ कि मैं नहीं गया । न मुझे पता कि जगजीतसिंह कनाडा में तो कौन गया ? ऐ मानव ! तू स्वयं पूर्ण है । तेरी आत्मा में यदि तू स है, तेरा हृदय शुद्ध है तो जब कभी पुकार करेगा, किसी दुख के समय तो वह शक्ति—गुरू की शक्ति नहीं, तुम्हारे अपने विश्वास, अपने अ की शक्ति. जिस रूप में तुम उसे मानते हो सगुण रूप में मान तो सगुण रूप में, शब्द रूप में मानते हो शब्द के रूप में, तुम्हारी सह होगी अथवा किसी तरह से सहायता करे । मालिक सहायता कर करता है ।

मैं Liberator हूँ । लोगों को Liberate करना चाहता हूँ । सारबचन का शब्द पढ़ो । स्वामी जी कहते हैं —

बंधे तुम गाढ़े बन्धन आन ॥
एक बन्धन तो पड़ा देह का, दूजा त्रिया जान ।
तीजा बन्धन हाट हवेली, चौथा नाती मान ।
एक लड़ दो लड़ चौ लड़ रसरी, गहरे खूंटे गढ़े निदान ।

यह हैं बन्धन ।जब तक जो हमारा असली फकीरचन्द है या असल में तुम हो, इन बन्धनों से मुक्त नहीं होते तो तुम जहां से आये हो वहां वापिस नहीं जा सकते ।

बंधे तुम गाढ़े बन्धन आन ।
एक वन्धन तो पड़ा देह का, दूजा त्रिया जान ।
तीसरा बन्धन पुत्र विचारो, चौथा नाती मान ॥
नातिन के कहीं नाती होवे, फिर कहो कौन ठिकान ।
धन सम्पति और हाट हवेली, यह बन्धन क्या करूं बखान ॥
चौलड़, पचलड़ सत लड़ रसरी, बांध लिया अब बहु विधि तान ।
कैसे छूटन होय तुम्हारा, गहरे खूंटे गढे निदान ॥
मरे बिना तुम छूटो नाहीं, जीते जी तुम सुनो न काम ॥
जगत लाज और कुल मर्यादा, यह बन्धन तुम ऊपर ठा न ॥
रीति पुरानी कभी न छोड़ो, जो छोड़े तो जग की हान ॥
क्या क्या कहूं बिपति मैं तुम्हरी, भटकी जो नि भूत मसान ॥

यह बन्धन हैं । जब तक कोई पूर्ण गुरू नहीं मिलता तब तक कोई इन बन्धनों से छूट नहीं सकता । हम विश्वास करते हैं । किसी वस्तु के साथ हम अपने आपको attach करते अर्थात् बांधते हैं, जब हमारा अन्त समय आता है वह रूप हमारे सामने आ जाता है । यह मुझे विश्वास होगया । जो लोग मरे वह कहते हैं—बाबा फकीर आया । मुझे तो पता नहीं । मैं तो गया नहीं । चूंकि वह रूप उसने बनाया हुआ है वह उसके मन का है । कल्पित है, माया का हैं । यदि अन्त समय बाबा फकीर भी लेने को आयेगा राम या कृष्ण लेने को आयेगा तो उसको दूसरा चोला मिलेगा चूंकि उसका विश्वास उसके मन पर था ।

यही बात बाबा सावनसिंह कहते थे कि अन्त समय में यदि तुमको हरिद्वार में गंगामाई पर विश्वास है तो गंगाजी की मछलियां बनोगे । अब मैं पूछता हूँ कि जिनका विश्वास व्यास के डेरे पर है वह मर कर व्यास की

मछलियां बनेंगे। हरिद्वार की मछलियों को तो आटा मिलता है, पेड़ मिलते हैं और यहां कंडी लगाकर भून के खाई जाती हैं। यह सब बन्धन हैं। गुरू का बन्धन तुम यह समझते हो कि किसी को गुरु मान करके तुम उसके साथ झप्पी डालो। यह बन्धन है। गुरू नाम है ज्ञान का। सन्त सत्गुरु के पास बैठकर उसकी बात को सुनो, समझो और गुनो। फिर अपने अन्तर में अमल करो। तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा, अन्यथा राम के कृष्ण के, व्यास या होशियारपुर के या गंगा जमुना के पूजने वाले का आवागवन समाप्त न होगा। यह मेरा अनुभव है। यही बात हुजूर राय सालिगराम साहब ने 'प्रेमबाणी' नामी पुस्तक में लिखा है कि अन्त समय फिल्म चलेगी जिस पर रिश्तेदार भी आ जायेंगे, जिस गुरु से नाम लिया है वह भी आ जाता है अथवा तुमको शब्द भी सुना दे। तुम्हारा सूक्ष्म शरीर कुछ समय तक ऊपर के लोकों में रहता हुआ जब सन्त सत्गुरु वक्त संसार में आयेगा, उसके सम्पर्क से संसार में आओगे। तब कमाई पूरी करोगे। वह कमाई पूरी करना क्या है ? वह मुझ से स्वयं न हो सकी। जब सत्संगियों द्वारा मुझे भेद ज्ञात हुआ, तब से मुझे विश्वास होगया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। तुम में समझ बूझ वाले आदमी हैं, सोचो जो मैं कह रहा हूँ। क्या गलत कह रहा हूँ ? यह आप बीती है। मैं पुस्तकों की बात नहीं कहता। क्यों ? यह पुस्तकें 'सारबचन पद्य', वेद, कबीर शब्दावली की बाणी सम्भव नहीं, क्योंकि इनमें स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं की गई। यदि की भी गई तो बड़े सूक्ष्म रूप से ! इसका प्रमाण ? कबीर ने अपने चेले धर्मदास को ही रहस्य बताने के बाद कहा था— धर्मदास तोहि लाख दुहाई। सार भेद बाहर नहि जाई '। इससे प्रगट होता है कि कबीर की जितनी बाणी है इसमें सार भेद को खोला नहीं गया। यही बात स्वामी जी महाराज ने कही— खोज री पिया को निज घट में। जो तुम पिया से मिलन: चाहो तो भटको मत जग में। वह जगत कौनसा है जिसमें हम भटकते रहे हैं। वह है हमारी मन की कल्पना।

हमारा मन हर समय विचार करता रहता है। किसी बात पर विश्वास

करता है। जिसके अन्दर बाबा फकीर प्रगट हो जाता है स्वप्न में या अभ्यास में, वह यह समझता है कि होशियारपुर का बाबा फकीर आया। वह अपने जगत में भटक रहा है। बाबा सावनसिंह कहा करते थे कि ऊंचा सत्संग शेरनी का दूध है। इसको रखने को सोने का बर्तन चाहिये। मेरे जैसे की बाणी सुनने के लिये विशाल हृदय चाहिये। जब्त (काबू) चाहिये।

मैं दुनियां को आजाद (मुक्त) नहीं कर सकता। मेरी बाणी मुक्त कर सकती है 'बाणी गुरू गुरू है बाणी, विच बाणी अमृत सारे।'

'भटको मत जग में' यह मेरी बाणी तो नहीं। जग तुम्हारे मन की कल्पनायें हैं। जितने भाव विचार, विश्वास, आशायें मस्तिष्क में हैं तुम इनको सत मानते हो। तो तुम भटक रहे हो। आज तुम्हारे अन्तर में फकीर प्रगट होगया। तुम कहोगे आज बाबा फकीर आये या बाबा सावन सिंह आये, सन्त कृपाल सिंह आये, राम आये। वास्तव में इनमें से कोई नहीं आया। सन्त मत की शिक्षा कोई नहीं देता। सन्त मत की शिक्षा है—'तीन सुन्न से पारा। वह है देश हमारा।' तुम नाम जपते हो। कोई कहता है राधास्वामी नाम है। कोई कहता है पंचनाम है। नाम कहाँ है ? 'नाम रहे चौथे पद माहीं, यह ढूंढे त्रिलोकी माहीं।' मुंह से राधा स्वामी जपना नाम नहीं है। मुंह से राम राम जपना नाम नहीं है। वह तो नाम है—शरीर को भूल कर बाह्य (स्थूल) इन्द्रियों को भूल कर, मानसिक (सूक्ष्म) इन्द्रियों को भूल कर परे जो प्रकाश रूपी तुम्हारा आत्मा है आदि निज रूप का नाम है। उसको सुनना, उसमें ठहरना नाम की प्राप्ति है मगर यह इतनी ऊंची मंजिल (या स्थान या अवस्था) है जिसको तमाम दुनियां समझ नहीं सकती, इसलिये बाबा सावन सिंह, व दातातयाल महर्षि शिव ब्रतलाल जी कहते थे कि बीज डाल दिया है। चलते रहो। पहुँच जाओगे। यह एक दिन का काम नहीं। 'यह है भटको मत जग में' का अभिप्राय। "तीरथ बरत करम आचारा, यह अटकावें मग में।" वह कहते हैं कि यह जो कर्म करते हो या नेकी करते हो, दान पुन्य करते हो, तुमने इनको सत माना हुआ है, इसलिये तुम अपने घर नहीं पहुँच सकते। आगे कहते हैं— "जब लग सतगुरु मिलें

न पूरे, पड़े रहोगे अध में।" जब तक तुमको पूर्ण गुरू नहीं मिलता तुम हमेशा अज्ञान (अंधकार) में पड़े रहोगे। मुझ को तो निकाला इन सत्संगियों ने। सलिये मैं 'मानवता मंदिर' में वह सत्सगी जिनके अन्दर मेरा रूप प्रगट आ या होता है, जब उन पर कोई आपत्ति आई, बाल बच्चों ने मारा, बराहट हुई, खाना नहीं मिला, उनको मैं मंदिर में रखकर, उनको सच्चा सतगुरू समझ कर उनकी सेवा करता। हूं क्योंकि मुझे इस रहस्य का पता उनसे मिला कि राधास्वामी मत में नई बात क्या है, उनके पास है क्या? कबीर के पास या स्वामी जी के पास क्या था?

मैं पाराशर गोत्र का ब्राह्मण हूं। स्वामी जी ने लिखा हैं कि पाराशर भूल गया। कौन आदमी है जो अपने बुजुर्गों की बुराई सुनने को तैयार है। मैंने सुना और प्रण किया कि मैं इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मुझे मिलेगा, वह मैं बता जाऊंगा। आगे लिखा है—

नाम सुधा रस कभी न पाओ, भरमों जोनि खग में॥

अब वह क्या थी कि नाम रस तुम नहीं पा सकते। 'जोनी खग' क्या है? खग कहते हैं पक्षी को। पक्षी का काम है कभी यहां कभी यहां। वह इधर से उधर, उधर से उधर उड़ा करता है। अर्थात् हमारी सुरत को अपने आप में ठहरने का अवसर नहीं मिलता। वह अपने आप से उड़कर रंग रूपों तथा दूसरी बातों की ओर जाती रहेगी। यह है अभिप्राय 'भरमों जोनि खग में' का। आगे—

पंडित काजी भेख शेष सब, अटक रहे डग डग में।
इनके संग पिया नहीं मिलना, पिया मिले कोई साध समग में।
यह तो भूले विषय वास में, भरम धंसे इनकी रग रग में।

कैसे? एक कहते हैं कि राम का दर्शन हुआ। राम तो उसके अन्दर आया नहीं। वह तो उसका अपना मन था। देखो! मेरे ऊपर इन सन्तों की जीवनों का प्रभाव है। गोस्वामी तुलसीदास रामायण का रचियता राम का कितना भक्त था! उस पुस्तक को पढ़ कर हिन्दू जाति आज दिन तक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

चित्रकूट के घाट पर, भई सन्तन की भीड़ ।
तुलसीदास चन्दन घिसें तिलक देत रघुबीर ॥

अब जो कोई इस बाणी को सुनेगा, पढ़ेगा, वह तो यह मानेगा कि तुलसीदास को राम मिला हुआ था । वह उनके पांव पड़ेगा । सेवा करेगा, धन देगा । उस तुलसीदास के पिछले सालों में शरीर में दर्द हुआ । चीख मारता था । चेले कहते महाराज ! राम को बुलाओ । कोई राम सहायता नहीं करता । कोई कृष्ण सहायता नहीं करता । मैंने ऐसे सन्त देखे जिनके नाम लो तो क्रोध आता है । उनकी हिस्ट्री पढो । मैं डर गया । इसलिये मैंने निष्कपट, निस्वार्थ होकर सचाई वर्णन की है ताकि मेरी आत्मा पर गुरु बनने का कोई पाप न लगे । हम जितने महात्मा हैं, जिन्होंने इस बात का पर्दा रक्खा, अपनी जायदाद बनाई अपने डेरे बनाये, मोटर खरीदीं, मैं कहता हूँ कि यह कहते होंगे कि हम संगत को तार ले जायेंगे मगर यह डूबे हुये हैं, जिनको स्वयं पता नहीं है कि हम कहां जा रहे हैं । आगे कहते हैं....

बिना सन्त कोई भेद न जाने, वह तोहि कहें अलग में ।

मैं पर्दे की बात नहीं कहता । जिसकी इच्छा हो मेरा सत्संग सुन या न सुन । जिसकी इच्छा हो मेरे पास आये चाहे न आये । जिसका जी चाहे मेरी पुस्तकें पढ़े या न पढ़े मगर मुझ से हेरा फेरी की बात नहीं कही जाती ।

स्वामी राम कृष्ण परम हंस की क्या दशा हुई । उस शाख का एक साधु मेरे पास आया । उसने भी कहा । मैंने भी कहा । मैंने कहा कि एक बात का उत्तर दो कि स्वामी कृष्ण का रूप विलायत में एक अंग्रेज के अन्दर प्रगट हुआ था । वह भारत में आया । उसका चेला बना । हां सुना था । मैंने कहा कि कहीं स्वामी राम कृष्ण ने कहा कि मैं उसके अन्दर नहीं गया । कहता है नहीं । मैंने कहा इसीलिये उसकी यह दशा हुई । मैं वहम में आगया हूँ । मुझे स्वयं पता नहीं मेरे जीवन का क्या परिणाम हो । कमसे कम मुझे इतनी शान्ति है कि मैंने शरीर चोला लेकर सिवाय एक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

॥ मनुष्य बनो ॥

मैं हूं रिसर्चर। सचाई पसन्द इंसान हूं। मुझ से पाखंड हेर...
धोखा फरेब नहीं हो सकता। मैं अपना मुंह काला करके वह बात कहता हूं
अपने घर वालों जिसे पसन्द नहीं करते, इसको मैं जानता हूं। यह बातें मैं
क्यों कहता हूं क्योंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी है। ऐ मानव ! तुझ को जो मिलेगा
तेरे कर्म का फल मिलेगा। इसलिये मैंने शिक्षा को बदल दिया। भले ही
तुम नाम न जपो। यदि तुम्हारी नीयत साफ है, बेगरज हो, अपनी गरज के
लिये किसी से धोका नहीं किया, तुमको काहे का डर। किस बात का भय जब
तुमने कोई पाप नहीं किया।

मेरे जिम्मे निबल अज्ञानी जीवों की सहायता करना मेरी ड्यूटी है।
ऐ मानव ! तुझे जीवन विषय विकार को नहीं मिला। कई हजार आदमी
मेरे पास आते हैं जिनके ७-७ बच्चे हैं। फिर भी वह विषय विकार नही
छोड़ते। स्वास्थ्य कमजोर हो जाता है। दिमाग खराब हो जाता है, इसलिये
मैंने शिक्षा को बदल दिया। ऐ इंसान ! अपने शारीरिक और मानसिक
ब्रह्मचर्य को काबू कर। आवश्यक्ता से अधिक विषय मत भोग। अपने निजी
स्वार्थ के लिये किसी के साथ धोका मत कर। तुम लाख नाम जपते रहो
यदि तुम्हारी नीयत शुद्ध नहीं है तो नाम ने तुम्हारा बेड़ा पार नहीं कर देना
कर्म जो जो कि ये हैं अन्त में भोगना पड़ना।'

मेरी जीवन की रिसर्च ने यह सिद्ध किया—As shall you sow
so you will Reap (जैसा तुम करोगे, जैसा तुम सोचोगे, वैसे ब
जाओगे। संसार में कोई बेटा बनता है, कोई भाई बनता है कोई बा
कोई चाचा, कोई ताऊ कोई गुरू बनता है। यह हमारे पिछले जन्म
कर्म के लेख लिखे हैं। तो तो मैंने शिक्षा को क्या बदला ? यही कि
मानव ! यह जितना खेल है यह तेरे मन का है। इस मन को काबू में कर
यही राधास्वामी मत की शिक्षा है। चूंकि यह मन काबू में नहीं हो
इसलिये हर एक मनुष्य की प्रकृति के लिये, उसकी प्रकृति देखकर गुरु अ
अलग आदेश देता है ताकि उसका जीवन सुधर जाय। दाता दयाल जी
...... (अध्यात्म) नहीं बताई किन्तु मेरे जीवन के लिये सारी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

समझाई। जब कोई आपत्ति आती तो उनसे पूछता। वे कह देते ऐसा करलो। मैं वैसा करता। हर एक को पता नहीं है कि रास्ता कौन सा है। इसलिये 'गुरू जो कहें सो चित धर कान, 'गुरू जो कहे सो हित कर मान'। मेरी समझ में यह बात आई है। मेरा सांसारिक जीवन भी उन्होंने संभाला और मेरी आध्यात्मिक जिन्दगी भी संभाली। मुझे और आदेश था। मेरी स्त्री को और आज्ञा थी। मेरे छोटे भाई राय साहब ट्रैफिक मैंनेजर रेल्वे हुये हैं। उनको नाम दान दिया जब वह स्कूल में पढ़ता था। उसको कहा नाम नहीं जपना। तेरे लिये जीवन का अर्थ कार्य और कार्य का अर्थ जीवन है। नान-मैट्रिक लड़का होता हुआ गुरू की आज्ञा का पालन करता हुआ ट्रैफिक मैंनेजर रेलबे मैन होके राय साहब का खिताब मिला। अब सन्त होगया। यह उन दिनों की बात थी।

आज मैंने सतसंग शुरू किया था। सत्संग क्यों करता हूँ? मेरा कर्म भोग, गुरू की आज्ञा। तीसरे जो मैं कहता हूँ उसका दावा नहीं करता। मेरे जीवन का अपना अनुभव है। अब मैंने आपको तीन चार बातें बतादीं अपनी नीयत को साफ करके काम करो। अपने जीवन के लिये किसी के साथ हेरा फेरी न करो। दुनियाँ के कारबार में झूठ भी बोलना पड़ता है। मैं अफसर रहा हूँ। यदि मुझ से कोई गलती हुई तो मैंने तुरन्त मान ली। यदि मेरे मातहतों ने कोई गलती की तो मुझे झूठ बोलने में हिचक न हुई। कागजात बदलवा दिये। उनको बचा लिया। अफसर पूछते कि क्या उसने गलती की। सच कहूंगा तो तुम सजा दोगे। हम दुनियाँ में सच्चे होकर रह नहीं सकते। तुम समझ लो मेरी बात को। इसलिये कोशिश यह करो—Be true to your Conscience एक बात। दूसरे यह जो मंजिले वर्णन की हैं यह सन्तों की हैं। उन्होंने सब का खंडन क्यों किया? जितने भी हम भक्त दूसरे की भक्ति करते हैं यह सब हम मन के मंडल में करते हैं। चौदह लोक तक काल का पसारा है। इसलिये सन्तों ने कहा है। प्रकाश और प्रकाश या ब्रह्म, शब्द और शब्द ब्रह्म में लगने की कोशिश करो अगर यहां तक पहुँचना हर एक का काम नहीं है। आप लोग ...

या अच्छा मानो,। हम लोग लोगों को नाम देते हैं। यह नाम नहीं देते, जहर देते हैं। हम अपने डेरे अपने धाम अपने नाम को विख्यात करने के लिये हजारों चेले बना लेते हैं। नाम का अधिकारी कौन है ?

विषयों से जो होय उदासा।
परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीति नहिं जाके।
खोजत फिर साध गुरु जाके ॥

चूंकि मन महा चंचल है, ठहरता नहीं इसको किसी रूप का सहार देना है। बस एक बात को एक शब्द बना लो। उसका सहारा दो। तू नाम जपते हो। अब तुमको नाम के अर्थ का पता नहीं है तो तुम ला नाम जपते रहो। यहाँ तुमको एक उदाहरण देता हूँ। यहाँ मैं एक नीबू आता हूं। उसको काटता हूँ। उसको नमक मिर्च लगाकर चाटता हूँ तुम्हारे मुंह में पानी आयेगा या नहीं ! क्यों आयेगा ? क्योंकि तुम्हा दिमाग में यह ख्याल बैठा हुआ है कि नीबू खट्टा होता है। तो मैं जब नी का नाम लूंगा, खटाई तुम्हारे सामने आ जायेगी। इसलिये जो नाम तुम्ह गुरू देता है उसका पहिले अर्थ समझ लो। यों ही ऊट-पटांग नाम मत ज जाओ। इसलिये बार बार कुछ दिन सत्संग करो। कछुक दिना की सत्संगा। होय मान मद मोह अभंगा। एक बात। दूसरे ध्यान करते हो एक स्त्री जब लड़का उसका ध्यान करता है चूंकि उसने मां-माना हुआ उसकी माता का रूप उसके सामने आकर उसके मन को पवित्र बनायेग सिर झुक जायगा। दूसरे ने उसको बहिन माना हुआ है। जब वह देखेगा उसका रूप उसके सामने आयेगा। उसका भाव कुछ और होता तीसरा उसको स्त्री मानता है उसका भाव कुछ और होगा। चौथा बदम उसको कुछ और समझता है। इसलिये जिसका तुम ध्यान करते हो पा उसको समझ लो कि वह कौन है। जिसकी मूर्त्ति बनाते हो तुम तो समझते हो कि वह व्यास में रहता है या होशियारपुर में रहता है आगरा में रहता है। अरे ! उस रूप को पूर्ण मानो। गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्वि

गुरुर्देव महेश्वर । गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरु वे नमः। इसलिये जिस रूप का तुम ध्यान करते हो उसमें उसको पूर्ण मानो । इसलिये जिसे तुमने माना हुआ है तुम्हारे मानने के अनुसार तुम्हारी वृत्ति और हो जायगी । जब किसी को ऐसा विश्वास नहीं है गुरु में, उसको ध्यान करने से कोई लाभ नहीं ।

मेरी सफलता का रहस्य क्या है ? मैंने महर्षि जी के रूप में मालिक को माना है । मैंने महर्षि जी को इंसान नहीं माना । जिन्होंने बाबा सावन सिंह जी से नाम लिया और जो कहते हैं कि बाबा सावन सिंह चोला छोड़ गये उन्होंने नाम लिया ही नहीं । वह रूप तो मरता नहीं और न जन्मता है । इसलिये बार बार कहा जाता है कि सत्संग की महिमा है । पहिले कुछ दिन सत्संग करो । आज कल तो यह ढंग है कि सुबह की गाड़ी से जाओ और दोपहर को वापिस चले आओ । धर्मदास तीन वर्ष कबीर साहब के पीछे पड़ा रहा । आप रोज मेरे सत्संग को या इतवार को सोच समझ कर पढ़ा करो, सुना करो और गुना करो । तुमने गुरु भक्ति यह समझी हुई है कि गुरू महाराज आगये । अंगूर दे दिये, फल दे दिये, कपड़ दे दिये । यह यह मैं नहीं कहता कि यह बुरा हैं । इस भक्ति के बिना भी कोई उन्नति नहीं कर सकता । असली भक्ति क्या है ?

दर्शन करे, बचन पुनि सुने । सुन सुनकर नित मन में गुने ॥
गुन गुन काढ़ि लेय तिस सारा । सार काढ़ि तब करे अहारा ॥
कर अहार पुष्टि हुआ भाई । जग भो लाज सब सब गई नसाई ॥
स्वामी जी ने लिखा है ।

सब जीव आये सतगुरु आगे ।
शब्द न पकड़ा बचन न लागे ॥
कहो इस सत्संग से क्या फल पाया ।
वक्त गया और जन्म गंवाया ॥

फिर तुम लोगों ने क्या करना है । यह तो मैंने तुमको संत मत का भेद बताया कि मैं क्यों सत्संग का काम करता हूं । सत मत की शिक्षा जो मैंने समझी है वह यह है ।

मैं तो अपने घर जाना चाहता था । जो ...

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

।। मनुष्य बनो ।।

मन के रूप रंग जितनी मन की रचना है या जो मैं मन की रचना बनाता हूँ, जितने मन के रूप, संकल्प विकल्प होते हैं, मेरा घर इनसे परे है। जब से तुम लोगों से सुना कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट होता है और मदद करता है और मैं नहीं होता तो मैं इस मन को छोड़ कर, रूपों को छोड़ कर केवल प्रकाश और शब्द में चला जाता हूं। मगर मैं अपने घर जाना चाहता हूँ। जो अनुभव मुझ को सत्संग या सन्त मत से मिला, तो मैं विवश हूँ कि अपने आपको मैं वहाँ ले जाऊं जहां मन, बाणी, बुद्धि चित, अहंकार नहीं हैं। दूसरे शब्दों में दसवें द्वार से परे। मेरे अन्दर प्रकाश होता है। शब्द होता है। अब मैं उस वस्तु की खोज करता हूँ जो मेरे अन्तर प्रकाश रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है मैं और हूँ और प्रकाश और है। वह जो मेरी मैं है मैं उसको ढूंढ न पाता। उसका मुझे अन्त नहीं मिलता। मेरा जीवन बीत च अभ्यास करते करते। वह क्या है। न वह कहने में आ सकता है न उस कोई रूप है। प्रकाश का तो कोई स्वरूप है। स्वरूप का कोई अस्तित्व मगर जो वस्तु शब्द को सुनती है उसका मुझे कोई पता नहीं कि वह है। वह है अकह, अपार, अगाध, अनामी। वह है मेरा रूप। अजर, अ अविनासी, मैं कौन हूँ ? तुम कौन हो ? तुम वह हो जो तुम्हारे अन्तर को सुनती है और प्रकाश को देखती हो। तो तुम और हम कौन हैं। मालिक सर्वाधार के स्वरूप हैं। उसके अंश हैं। इस संसार में Evoluti के सिलसिले में आये और बन्धन में आगये। यह मेरा, मन मेरा, पुत्र मेरे। प न ध्यान मेरा, न पुत्र मेरा न घर मेरा, न मेरा शरीर, न मेरा मन, न और। मैं सोचता हूँ कि अच्छा फकीर चन्द क्या तू वह बन गया। समझ में आया। जो किसी को मिलता है वह उसका विश्वास है। मैं नहीं करता। यदि मैं कर सकता तो मैं कई बार बीमार होता हूँ। बीमारी का इलाज आप कर लेता, मगर मैं नहीं कर सकता। क्या महात्मा कर सकते हैं ? बाबा सावन सिंह का जवान लड़का मर क्या बचा लिया ? दातादयाल का धाम उजड़ गया। स्वामी जी म

स्वामी बाग में दो साल बीमार पड़े रहे। कबीर साहब को दस वर्ष दर्द गुर्दा रहा। फिर मैं कहां पहुँचा। मैं नहीं कहता कि मैं अनामी हूं, अकह हूँ, अगाध हूँ, अपार हूँ। मैं कहता हूँ कि वह सर्वाधार है। मैं उसका अंश हूँ। (Evolution) के कारण मुझ में मैं आगई। भ्रम आगया। अब क्या कहूँ। लब खुले और बन्द हुये यह राजे जिन्दगानी है। उस प्रभु की लीला अपरम्पार है। कोई आज तक कह न सका। न कबीर को पता लगा स्वामी जी को पता लगा। अनन्त माया है। जितनी जितनी जिसकी बुद्धि थी उतना उतना उसने वर्णन किया। मुझे सन्त मत में आने से क्या मिला! His Will is Supreme उसकी इच्छा सर्वोपरि है। जो कुछ हो रहा है, हो रहा है। होहि वही जो राम रचि राखा। उसकी लीला मेरी समझ में नहीं आई। बहुत दौड़ा हूँ। हर चीज को जानने की कोशिश की। मिला क्या? शरणागतम्। अब अपने आप को उसकी शरण में ले जाता हूँ। दौड़ा हूँ। दौड़त दौड़त दौड़िया जहं लग मन की दौड़। दौड़ थका मन थिर भया, वस्तु ठौर की ठौर। अब मुझको संशय नहीं सताता। न राम की तलाश करता हूँ न गुरू की खोज करता हुं। गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का, विवेक का। शान्ति मिल गई। पता नहीं यह ही सन्त मत है या राधास्वामी मत कोई और बला है, मुझे पता नहीं। जो समझा कह चला। दावा किसी बात का नहीं है। दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। क्या बदल रहा हूँ। ऐ इंसान! तू खुदा या ईश्वर के नाम पर मत बट जा। इस अज्ञान से मुसलमानों ने हजरत अली कह कर हिन्दुओं और सिक्खों के सिर काटे। हिन्दुओं ने हनुमान और सिक्खों ने सत श्री अकाल कह कर मुसलमानों के सिर काटे। धार्मिक घृणा, धार्मिक झगड़े। इसलिये मैंने आवाज उठाई—

गुरु पशु नर पशु त्रिया पशु, वेद पशु संसार।
मानष ताही जानिये, जाहि विवेक विचार॥

अब मैं सादा जीवन गुजारता हूँ। क्या पता मेरे साथ क्या हो। मुझे इस पंथ में आनेसे क्या मिला?

॥ मनुष्य बनो ॥

वारी जाऊँ मैं सतगुरू के, जिन किया भरम सब दूर ।
चन्द चढ़िया कुल आलम देखे, मैं देखा भ्रम दूर ॥

जो भ्रम था वह दूर होगया । आप लोग आगये । मेरे पास सिवाय शुभ कामनाओं के और कुछ नहीं है । लोग सत्संग में आते हैं । जिनका विश्वास होता है उनका काम पूरा होजाता है । मैं कुछ नहीं कर सकता ।

न कुछ किया न कुछ कर सकूं, न करने योग शरीर ।
जो कुछ किया सो हरि किया, भयो कबीर कबीर ॥

यही कबीर कहते हैं और यही मैं कहता हूँ । सत्संगियों ने मेरा पर्दा उठा दिया । अब इनको गुरु मानूं कि नहीं ! अब मैं इनको पूजता हूं ।

शिष्य नवें गुरु को, यह जाने सब कोय ।
गुरु नवें जब शिष्य को, विरला जाने कोय ॥

यह रहस्य है जो जल्दी उठता नहीं । बहुत सत्संग करना पड़ता है, तब उठता है ।

आपने मेरा भाषण टेप रिकार्ड किया । इसको सुना करो और अपने अन्दर सच्चे बनने की कोशिश करो । दिखावे का काम न करो । जब अकेले बैठो, अपने आपको शरणागत (Surrender) करो । गुरु न व्यास में है और न होशियारपुर में हैं । गुरु तुम्हारे अन्तर में है । जिसको मानते हो पूर्ण मानो । तुम्हारा काम हो जायगा ।

परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज का संदेश

(मानवता मंदिर, होशियारपुर २१-११-७५)

भारत माता ! इन्द्रा के रूप में

मैं सच्चे हृदय से भारत माता के चरणों में नमस्कार करता हूं ।
[illegible] और उसके बनाने वाले का विचार आया ।

अब मेरी ८९ वर्ष की आयु है। उस मालिक की खोज में हूँ। मालिक या ईश्वर एक नियम है, एक कानून है और वह कानून है वासना का। यह संसार वासना का रूप है।

मैंने ४५ मिनट तक ११ नौम्बर १९७५ को रेडियो पर भाषण सुना था। इस भाषण के सार को समझ कर विचार आया कि जिस शरीर से यह भाषण निकला है और जिस शक्ति ने यह भाषण दिलाया, वह सच्चा प्रेम रखने वाला और हितैषी है। वह भारत वर्ष का हमदर्द है। इसलिये मैं इस भाषण देने वाली की आत्मा को भारत माता कह कर नमस्कार करता हूँ।

इस कुदरत के कानून को किसी हद तक मैंने समझा है। इस कानून को समझाने के ख्याल से, क्योंकि मेरे जिम्मे मेरे परम पूज्य सतगुरु महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज ने जगत कल्याण का काम दिया था। वह मेरे लिये एक जगह लिखते हैं—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही ।।

इस कर्त्तव्य को निभाने के लिये मैंने 'इंसान बनो' की आवाज उठाई थी और मानवता मंदिर (होशियारपुर पंजाब) स्थापित किया। जिस तरह किसी नियम के आधीन वर्तमान विज्ञान अच्छी नस्लों के पशु और अच्छी प्रकार की फसलें तैयार करने की कोशिश कर रहा है, इसी तरह जब तक मानव जाति को यह पता नहीं कि संसार में मनुष्य कैसे पैदा किये जा सकते हैं, देश का भला नहीं हो सकता। मेरी समझ में यह आया है कि इस समय संसार में खुदरा (अनचाहे) वृक्षों की तरह खुदरा मनुष्य पैदा हो रहे हैं। तुख्म (बीज) की तासीर (प्रभाव) और संगत का प्रभाव कभी व्यर्थ नहीं जाता। इसलिये जो कर्त्तव्य मुझ पर लगाया गया है, मैं कह देना चाहता हूँ कि जब तक स्त्रियों और पुरुषों को यह ख्याल नहीं दिया जाता कि सन्तान कैसे उत्पन्न की जाय, जीवों का जीवन कंट्रोल में नहीं रह सकता। मैं यह मानता हूँ कि कौम को बनाने वाले धर्म और सरकार हैं